ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 164-166**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

यशपाल की कहानियों में मनुष्यता और सामाजिक यथार्थ की पड़ताल

1. अनिता खण्डेलवाल
2. डॉ0 आनंद राय

1.शोध अध्येत्री , 2. शोध निर्देशक– हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) भारत

Received-10.05.2025, Revised-18.05.2025, Accepted-24.05.2025 **E-mail : anitakhandelwal86@gmail.com**

सारांशः ***यशपाल शर्मा प्रेमचंदोत्तर युग के समर्थ समाजवादी कथाकार थे। इन्होनें अपने साहित्य में सर्वाधिक महत्व सामाजिक यथार्थ को दिया है। इनका मानना था की मार्क्सवादी विचारधारा ही से समाज का कल्याण हो सकता है। इसी भावना से अपनी कहानियों में पुरानी कुरीतियों, अंधविश्वास और वर्ग–भेद विषयों को कहानी की पृष्ठभूमि बनाया। 'कुत्ते की पूंछ' कहानी में बताया गया है कि पूंजीपति वर्ग का निम्न वर्ग के प्रति प्रेम और सम्मान की भावनायें केवल मात्र ढकोसला है, यथार्थ में वह उसे सक्षम नहीं होने देना चाहता है ताकि, वह उनकी गरीबी और आवश्यकताओं को पूर्ण करने के बदले उसका शोषण जारी रख सकें। यशपाल की कहानियाँ भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर करती हैं, जहाँ मनुष्यता संघर्ष और शोषण के बीच जीवंत बनी रहती है।***

इस शोध पत्र के माध्यम से यशपाल का जीवन वृत्त और उनकी लिखी कहानी 'कुत्ते की पूंछ' के विश्लेषण को शीर्षक "यशपाल की कहानियों में मनुष्यता और सामाजिक यथार्थ की पड़ताल" के साथ प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक यथार्थ, समाजवादी कथाकार, मार्क्सवादी विचारधारा, समाज का कल्याण, वर्ग–भेद, अंधविश्वास

लेखक परिचय–बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार यशपाल का जन्म ३ दिसम्बर १६०३ को फिरोजपुर छावनी में हुआ। इनके पिता हीरालाल और माता प्रेम देवी थीं। बाल्यकाल से ही इनका जीवन संघर्षो से भरा हुआ रहा। गरीबी और असुविधा के बीच पले बढ़े होने के कारण समाज में पूंजीवाद और शोषण के अनुभवों से प्रेरित हो कर, अपनी कल्पना शक्ति से अद्भुत कहनियों की रचना की है। अपने अनुभवों द्वारा ही एक सशक्त साहित्यकार स्थापित हुए। पिता के पास परिवार के भरण पोषण के लिए कोई पर्याप्त आय नहीं थी और पारिवारिक झगड़ों में रही–सही सम्पत्ति भी समाप्त हो गई थी। इन्हीं परिस्थितियों के चलते माता ने आर्य समाज के गुरुकुल से अध्यापिका बनने की शिक्षा ली और उसी विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी करनी शुरू की। माता का विवाह, पिता की बड़ी उम्र में हुआ था इस कारण माता पिता ज्यादा समय साथ नहीं रह पाए और पिता का निधन हो गया। पिता के निधन के पश्चात यशपाल और उनके भाई की पूरी जिम्मेदारी माता के ऊपर आ गई। इनकी माता ने बड़ी मेहनत और स्नेह से दोनों बच्चो को बड़ा किया। इनकी माता का ऐसे काल–खण्ड में आत्मनिर्भर होकर, जब नारी को केवल घर की चारदीवारी में रहकर पुरुष प्रधान समाज के बनाए नियम–कानून के साथ जीवन बिताना होता था तब, घर से बाहर निकलकर, नौकरी करके परिवार की देखभाल करना, उनके मन–मस्तिष्क पर स्त्री का शिक्षित होकर सक्षम होने का गहन प्रभाव पड़ा और उन्होंने इसे समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण माना। यशपाल की माता की आर्य समाज के सिद्धांतों में अगाध आस्था थी और वे यशपाल को आर्य समाज का तेजस्वी प्रचारक बनाना चाहती थी।

आर्थिक स्थिति अच्छी न होने कारण उनकी आरम्भिक शिक्षा कांगड़ी – गुरुकुल में हुई और उनमें राष्ट्रीय भावनाओं का जन्म वहीं से हुआ। परन्तु गुरुकुल के कड़े नियमों को यशपाल झेल नहीं पाए और उनका स्वास्थ्य ख़राब रहने लगा इस कारण उनको गुरुकुल से निकाल कर देहरादून ले जाया गया। स्वास्थ्य ठीक होने के बाद मनोहर लाल हाई स्कूल में भर्ती करवाया गया वहां प्रथम श्रेणी से पास होने पर उन्हें सरकारी कॉलेज में पढ़ने के लिए दो साल की छात्रवृत्ति मिलने वाली थी, और नौकरी पक्की थी। परन्तु यशपाल का झुकाव राष्ट्र– भक्ति की ओर होने लगा जिस कारण वह सरकारी कालेज की जगह लाहौर के नेशनल कॉलेज में भर्ती हो गये और यहीं उनका परिचय भगतसिंह और सुखदेव से हुआ और यशपाल क्रांति की लड़ाई में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

सन् १६२६ में वायसराय की गाडी के नीचे बम रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया परन्तु मौसम की खराबी के कारण बम समय पर नहीं फटा, जिससे अंग्रेजी सरकार सतर्क हो गई और यशपाल के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्हें चौदह वर्ष कारावास का दण्ड मिला। इसी बीच इनका विवाह ७ अगस्त १६३६ में बरेली की जेल में प्रकाशवती से हुआ जो अपने आप में एक इतिहास है। क्योंकि इसके बाद सरकार ने जेल में ऐसे किसी गतिविधि पर रोक लगा दी थी। सन् १६३८ उत्तर प्रदेश में जब कांग्रेस मंत्रिमंडल बना तो सभी बंदियों के साथ इनको भी रिहा कर दिया गया।

यशपाल क्रांतिकारी यशस्वी साहित्यकार रहे हैं, इन्होंने हिंदी साहित्य में प्रेमचंद की परम्परा को बढ़ाते हुए योगदान दिया। साहित्य में इसी योगदान के लिए उन्हें १६७० में पद्म भूषण, १६७६ में साहित्य अकादमी पुरस्कार और कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित गया। १६७६ में यशपाल का ७२ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। यशपाल प्रगतिशील विचारधारा के लेखक थे और उन्होंने अपने जीवन काल में १७ कहानी संग्रह, ७ उपन्यास, ४ निबंध संग्रह, आत्मकथा जिसके तीन भाग प्रकाशित हुए है, नाटक, यात्रा विवरण, और अन्य कई पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखे।

यशपाल के गुरुकुल का अनुभव, क्रांतिकारी भावना और राजनीतिक समझ उनको अपने साहित्य में वैचारिक क्रांति लाने में सहायक सिद्ध हुए। उनकी बौद्धिकता, क्रांतिकारी साहस दोनों ही उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। सन् १६३८ में जेल से छूटने के बाद इन्होंने लखनऊ में रहकर लेखन कार्य शुरू किया और जीवन पर्यन्त अपनी लेखनी से देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डालते रहे। यशपाल हिंदी साहित्य के वे कहानीकार हैं जिन्होंने प्रेमचंद की परम्परा को आगे नए आयामों में प्रस्तुत किया। इन्होने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग की समस्याओं को बड़े ही सरल भाषा में व्यंगात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। ये सदैव मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक थे जिस कारण इन्होंने अपनी कहानियों द्वारा समाज की कुरीतियों व अंधविश्वासों पर भी तीखा प्रहार किया है। उन्होंने अलग–अलग वर्गों, उनकी स्थितियों और समस्याओं को अपनी कहानियों में उतारा है। समाज के अनदेखे किन्तु कड़वे सच को स्पष्ट रूप से हमारे सामने दिखाया है।

प्रेमचंद के बाद यशपाल ही हैं जिन्होंने मनुष्य को अपनी अंतर्दृष्टि से उसकी अपेक्षाएं और संवेदनाओं को अपने अनुभव से मार्मिक चित्रण किया है। उपेन्द्रनाथ ने अपनी पुस्तक 'हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय' में लिखा यशपाल के बारे में लिखा है –

"यशपाल, सीधी–सपाट लेकिन यथार्थ और व्यंग्य भरी शैली में लिखते हैं। मार्क्सवाद के सूत्रों को उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। और बेहतर समाज की व्यवस्था का स्वप्न लेकर वर्तमान समाज के झूठ की आलोचना की है।"

यशपाल हिंदी साहित्य के सफल क्रांतिकारी यशस्वी साहित्यकार हैं। यशपाल के कथा–साहित्य में 'कुत्ते की पूँछ' कहानी उनकी सर्वोत्तम कृतियों में से एक है, यह कहानी सर्वप्रथम 'वो दुनिया' नाम के कहानी संग्रह में १९४२ में प्रकाशित हुई। इस कहानी के माध्यम से मध्यम वर्ग के यथार्थ को प्रस्तुत किया किया है। अहम् की तुष्टि पर व्यंग्य करते हुए, तीखे प्रहार से समाज का असली चेहरा सामने ला कर खड़ा कर दिया है और सामाजिक संबंधों में अमानवीयता और उदासीनता के कारण मानवीय मूल्यों के गिरते हुए स्तर का चित्रण किया है। इसी संदर्भ में यशपाल ने 'वो दुनिया' कहानी संग्रह की भूमिका में लिखा है – "यह दुनिया विषमता से भर गई है। इस दुनिया का वैमनस्य उस दुनिया में न होना चाहिए। इस दुनिया की कटुता से ही उस दुनिया की चाह उठती है, इसलिए दिल पुकार उठता है – 'वो दुनिया'"। इस कहानी संग्रह के माध्यम से वे एक नए समाज का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें शोषक और शोषित का भेद न हो। यशपाल ने 'वो दुनिया' कहानी संग्रह में ज्यादातर कहानियां समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता के संबंध में लिखी हैं – गुडबाई दर्दे दिल, सन्यासी, वो दुनिया, मोटर वाली – कहानियां आर्थिक विषमता का एक उत्तम उदाहरण हैं। आर्थिक विषमता के साथ ही प्रेम–सेक्स समस्याओं, पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासो को भी इन्होंने अपनी कहानियों में उजागर किया है।

कहानी–'पात्र श्रीमती की इच्छा थी की वो सिनेमा हाल में लगी हुई नयी फिल्म 'उलटी बयार' देखने जाये और कहानी के नायक वकील साहब को फिल्म देखने जाने के लिए अपने दफ्तर से जल्दी निकलने के कारण आने वाली परेशानी, परेशान कर रही थी। परन्तु श्रीमती जी को नाराज भी नहीं करना चाहते थे, और दफ्तर से जल्दी न आने के कारण दूसरे शो में भी नहीं जाना चाहते, क्योंकि रात को देर से सिनेमा से लौटने पर अगले दिन ऑफिस का काम ठीक से नहीं होगा। पर पत्नी की हठ के आगे न चाहते हुए भी रात को सिनेमा देखने गए। लौटते समय तांगे का किराया बढ़ जाने के कारण पैदल ही घर की और निकल पड़े। चांदनी रात में दोनों फिल्म की कहानी और कला की चर्चा करते आ रहे थे, यकायक श्रीमती पुकार उठी– "यह देखा"– रास्ते में हलवाई की दुकान थी जो लगभग बंद हो चुकी थी और उसका मालिक दीवार से लग कर ऊंघ रहा था। पास ही बिजली के छोटे से बल्ब के नीचे एक छोटी उम्र का लड़का कड़ाही में सर रख सोया हुआ था, उसके हाथ में कालिख लगा हुआ बर्तन साफ़ करने का झूना था और दूसरे हाथ से कड़ाही का कड़े को थामा हुआ था। शायद कड़ाही को साफ़ करते–करते थक कर सो गया होगा। श्रीमती का बच्चे की ऐसी हालत देख दिल पसीज गया और बच्चे को प्यार से पुचकारने लगी। लड़का झटके से उठा और डर के मारे फिर से कढ़ाई को घिसने लगा, यह सब का शोर सुन कर लाला की आँख खुल जाती है, वह कुछ समझ पाता उससे पहले श्रीमती जी उस लड़के की बाँह पकड़ अपने साथ लेकर चलने लगी। लाला भी बड़ा अफसर समझ कर चुप रह गया। पर अगले दिन सुबह बंगले पर आया और अपनी मजबूरी की दुहाई देने लगा की बच्चे से काम करवाना उसकी मजबूरी है क्योंकि उसके पिता पर साठ रुपए उधार हैं पर वह मर गया, और लाला लड़के से बदले में अपनी दुकान पर काम करवाता है। लाला की बात सुन वकील साहब ने उसे लड़का भगाने के जुर्म में गिरफ्तार होने की धमकी देते हैं, तो वह चुपचाप वहां से खिसक लेता है।

श्रीमती जी अपनी विजयी मुस्कान के साथ 'हरुआ' को मनुष्य बनाने के अभियान में लग जाती है। हरुआ से हरीश बना दिया गया, क्योंकि नाम कुछ जँच न रहा था। मैले–कुचले शरीर को लाइफबॉय के साबुन से रगड़–रगड़ कर नहलाया गया जिससे साबुन के झाग से मटमैले रंग के आवरण में से हरीश का रंग निखर कर साँवला सलोना निकल आया। दरबान के साथ सलून भेज कर कानों तक आये लम्बे बालों को छँटवा दिया तो उसका रूप ही बदल गया। श्रीमती जी ने अपने बेटे बिशू की पुरानी कंघी, कपडे देकर बिलकुल अपने परिवार का सदस्य होने का स्थान दे दिया। हरुआ, जो अब हरीश है, उसके लिए नए जूते–जुराब, नेवीकट कालर के कमीज और नेकर सिलवा दिए गए थे और तरीके से रहने की हिदायतें दी जा रही थी। इन सब से हरीश को असुविधा अनुभव हो रही थी फिर भी श्रीमती जी के दबाब में आकर उसे वो सब करना पड़ रहा था जो उसने न कभी पहना और न देखा।

भावनाओं के सागर में डूबी श्रीमती जी कहती है– "उसके शरीर में भी वैसा ही रक्त–मांस है जैसा किसी और के शरीर में!" अपने पुत्र से तुलना करते हुए कहा कि वह भी मनुष्य का जीव है और उसे लायक बनाना हमारी जिम्मेदारी है। जब कभी हरीश अपनी इच्छा से कोई कार्य अच्छे से पूर्ण कर देता था तो फूली नहीं समाती थी की इस में भी दिमाग है इसे अवसर देंगे तो बहुत कुछ कर सकता है।

इन सब क्रियाकलापों में चार वर्षीय बिशू बहुत अधिक ना समझते हुए भी अपने अधिकारों को किसी दूसरे निम्न बालक के साथ बांटते हुए सहज नहीं था। माँ को किसी दूसरे बच्चे को प्यार से सर पर हाथ फिराना और अपने सामानों का हरीश को उपयोग करते देख नन्हा बालक भी ईर्ष्या से भर जाता था और उसे अपने हाथ में थमी वस्तु से मारने दौड़ता। श्रीमती जी हरुआ की गरीबी का अपमान जान कर बिशू को रोकती और हरुआ को अपने अधिकार के लिए लड़ने के लिए उपदेश देती रहती। कई बार वकील साहब को भी हरीश और बिशू के साथ समानता का व्यवहार करने के लिए कहा गया।

वकील साहब को रियासत के मुकदमे के काम से चार माह के लिए बाहर जाना पड़ा। अधिक आमदनी के लालच में परिवार को छोड़ समस्तीपुर में रहना पड़ा। पत्र व्यवहार से ही परिवार के कुशल–क्षेम मिलते रहते थे। प्रारंभिक दिनों मे श्रीमती जी के सप्ताह में तीन चार पत्र आ जाते थे और उनमे हरीश का भी जिक्र होता था। धीरे–धीरे पत्रों की संख्या कम होती गई और उसमे अधिकतर पत्र हरीश की शिकायतों से भरा होता था कि– वह पढ़ाई से जी चुराकर गली के आवारा बच्चों के साथ खेलता रहता है, वह एकदम मंदबुद्धि बालक है, अपनी जिद में कहना भी नहीं मनाता है। पत्र पढ़ वकील साहब सोच में पड़ गए की उनकी गैर–हाजरी में लड़का श्रीमती जी की उदारता से तीव्र गति मनुष्य बन जायगा पर ऐसा न हुआ।

वकील साहब के घर लौटते ही श्रीमती जी अपनी शिकायतों का पुलिंदा खोल कर बैठ गई– "तुम तो वहां जाकर बेफिक्र हो कर रहे और यहाँ तुम्हारे जाने के बाद बिशू को खांसी हो गई थी। मैंने हरीश को डॉक्टर लेने भेजा तो सुबह से दोपहर तक आवारा लड़कों के साथ खेलता रहा"। श्रीमतीजी ने उसे वहां बेकार में खड़ा देखा तो झुंझला कर हरुअ को गीले कपडे सूखाने के लिए बोला साथ ही खस की टाट्टियो को पानी से भिगोने का बोला – हरीश डरा–सहमता हुआ सब काम चुपचाप किये जा रहा था। बिशू को लीचियाँ खाते देख वह ललचाई नजरों से देखता है तो श्रीमती जी गुस्से में बड़बड़ाती है, "जाने कैसा भुक्खड़ है! इन लोगों को कितना ही खिलाओ, समझाओ, इनकी भूख बढ़ती ही जाती है"।

शाम को मौसम खराब होने के कारण हरीश ने जो कपडे सूखने डाले थे वो सब तेज हवा से उड़ कर गंदे हो गए तो श्रीमती का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और वकील साहब को खीज कर कहती है "तुम्ही बताओ मै इसका क्या करूँ? वही

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

बात हुई न कि कुत्ते का गू न लीपने का, न पोतने का"। वकील साहब सब सुन कर भी भी चुप रहते हैं, और बात टल जाती है। अगले समय श्रीमती जी बिशू को अपने पिता अर्थात वकील साहब की गोद में बैठा कर देखना चाहती है उसी समय हरीश भी अपने भोलेपन में वकील साहब से सटकर खड़ा हो जाता है। श्रीमती जी पहले ही चिढ़ी हुई थी, हरीश को चिपक कर खड़ा होता देख उसे जोर से फटकारा बेचारा हरीश शब्दों को तो नहीं समझ नहीं सका पर अपना निरादर उसे समझ आ गया था। वह उदास होकर मुंडेर पर खड़ा हो गया। यह सब देख वकील साहब श्रीमतीजी को समझाने कि कोशिश करते है और अपनी पत्नी के तर्क–वितर्क से बचने के लिए बात बदलते हुए सरकार और मजदूरों के झगड़ो के बातें कर बात अधूरी ही छोड़ देते है, अन्यथा उन्हें श्रीमती जी का लम्बा बयान और जिरह सुननी पड़ती। वकील साहब का विरोध में कुछ न बोलने पर श्रीमती जी ने तुनक कर कहा– "तभी तो कहते है– कुत्ते की पूंछ बारह बरस नाली में रक्खी पर सीधी नहीं हुई" और बातों ही बातों में उसे वापस लाला के पास वापस भेजने का विचार रख दिया। अपने 'जानवर को मनुष्य' बनाने के अभियान को असफल होता जान, झुँझलाकर, बनिया कहीं पैसे न मांगने आ जाए, इस पर चिंता जताने लगी। श्रीमतीजी का दीन–हीन बालक को पढ़ा–लिखा कर सभ्य मनुष्य बनाने की चेष्टा विफल रही, जिस कारण उनकी अहंकार की भावनायें आहत हो गईं और उस बच्चे, जिस को वे अपनी अहम् की तुष्टि हेतु घर ले कर आई थी, को घर से निकालने के लिए तैयार हो गई। वकील साहब के समझाने पर बात कुछ समय के लिए टल जरूर जाती है पर वकील साहब चिंता में थे की अब क्या किया जाये क्योंकि कुत्ते की पूंछ काट लेने के बाद वापस नहीं जोड़ा जा सकता उसी प्रकार किसी जानवर को मनुष्यता का चस्का लग जाए तो उसे जानवर बनाये रखना भी सम्भव नहीं है।

निष्कर्ष–यशपाल ने अपने में साहित्य में गरीब और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति और आत्मीयता को दर्शाने वाली बहुत सी कहानियां लिखी हैं। 'कुत्ते की पूंछ' कहानी इस विषय का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है की समाज में सभी वर्ग समान हैं और जीने का अधिकार सभी को है और छोटा हो या बड़ा सभी को वो मौका मिलना भी चाहिए। साथ ही समाज के उन लोगों को निशाना बनाया है जो गरीबों पर दया केवल दिखावे के लिये करते हैं। यदि वह गरीब अपने समानता के अधिकार का प्रयोग करने की चेष्टा भी करता है तो वह दया और प्रेम, क्रोध और घृणा में परिवर्तित हो जाती है। समाज के लोग अपने से निम्न वर्ग के लोगों को सदैव हीन दृष्टि से देखते हैं और दया के पात्र के रूप में ही देखना चाहते है। यशपाल ने समाज के निम्न वर्ग के लोगों की स्वयं के अस्तित्व को पहचानने के विषय को परिष्कृत किया है।

*****